।। श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम् ।।

श्रीनामामृतसमुद्रः

श्रीनरहरिचक्रवर्त्ति प्रणीतः
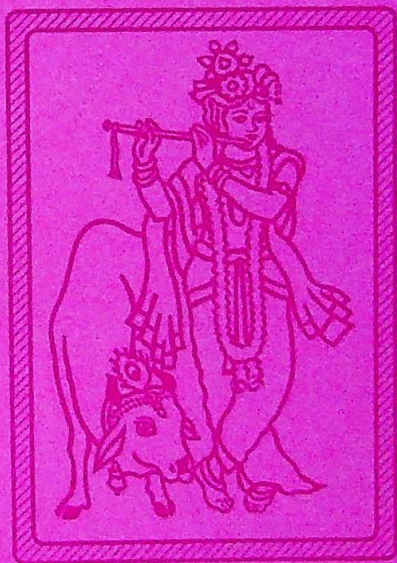
- श्रीहरिदासशास्त्री

।। श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम्।।

श्रीनामामृतसमुद्रः

[श्रील नरहरिचक्रवर्त्ति प्रणीतम्]

श्रीवृन्दावनधामवास्तव्येन
न्यायवैशेषिकशास्त्रिन्यायाचार्यकाव्यव्याकरणसांख्य
मीमांसावेदान्ततर्कतर्कन्यायवैष्णवदर्शनतीर्थ
विद्यारत्नाद्युपाध्यलङ्कृतेन
श्रीहरिदासशास्त्रिणा सम्पादितम्।

सद्ग्रन्थ प्रकाशक :

श्रीहरिदासशास्त्री

श्रीगदाधर गौरहरि प्रेस
(श्रीहरिदास निवास)
प्राचीन कालीदह, वृन्दावन (मथुरा) उ. प्र.

प्रकाशक :
श्रीचैतन्य संस्कृति संस्था
(श्रीहरिदास निवास)
प्राचीन कालीदह, वृन्दावन (मथुरा) उ. प्र.
फोन : 0565-2442098, 2443965

प्रकाशन तिथि :
श्रीगुरुपूर्णिमा
श्रीगौरांगाब्द : ५२१-५२२

द्वितीयसंस्करणम्

प्रकाशन सहयोग :
२०) रुपया मात्र

मुद्रक :
श्रीगदाधर गौरहरि प्रेस
(श्रीहरिदास निवास)
प्राचीन कालीदह, वृन्दावन (मथुरा) उ. प्र.

।। श्रीश्रीगौरगदाधरौ विजयेताम्।।

विज्ञप्तिः

तेभ्योनमोऽस्तुभववारिधिजीर्णपङ्क,
संमग्नमोक्षणविचक्षणपादुकेभ्यः।
कृष्णेतिवर्णयुगलं श्रवणेन येषा,
मानन्दथुर्भवति नृत्यति रोमवृन्दः।।

मनोग्राह्य वस्तु व्यवहार के निमित्त सांकेतित शब्द को 'नाम' कहते हैं, यह नाम आधुनिक संकेत एवं अनादि संकेत भेद से द्विविध हैं, आधुनिक संकेत, अधुनातन व्यक्तियों से होता है और अनादि संकेत, ईश्वर से होता है, सृष्टिकर्त्ता ईश्वर स्वयं ही वस्तु, शब्द संकेत, व्यवहारकर्त्ता रूप में आविर्भूत होते हैं, अतः इनमें यथार्थ अर्थ होता है, इनको ही गुण नामधेय कहा गया है।

इनमें आश्चर्यजनक अविसंवादित शक्ति है, एकबार मात्र भी 'श्रीनाम' उच्चारित होने पर प्राणी की मुक्ति हो जाती है।

'श्रीनाम' ही परिपूर्ण तत्त्व होने के कारण, सुधीगण–अतःकरण द्वारा नाम ग्रहण, नामाक्षर की चिन्ता, वाक्य एवं श्रोत्र द्वारा नाम ग्रहण, चक्षु द्वारा नाम ग्रहण, निखिल नामाक्षर का दर्शन, त्वक् द्वारा

नाम ग्रहण, वक्षःस्थलादि में नामांकन एवं पत्रादि में अंकित नाम का स्पर्श, हस्त द्वारा नाम ग्रहण, नामांकित मुद्रा धारण करते हैं। चतुःषष्टि भक्त्यंग में सर्वश्रेष्ठ अंग 'श्रीनाम' ही है, सर्वविध भक्त्यंग में श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण की प्रधानता है, इसमें भी कीर्त्तन की श्रेष्ठता है, नाम, गुण, लीला भेद से कीर्त्तन की विविधता होने से भी नाम कीर्त्तन ही श्रेष्ठतम है।

'श्रीनाम' श्रीकृष्णस्वरूप होने के कारण, श्रीकृष्णनामादि प्राकृत इन्द्रियगण से ग्राह्य नहीं होते हैं। इन्द्रियगण सेवा के निमित्त उन्मुख होने से 'श्रीनाम' स्वयं ही इन्द्रिय समूह में स्फुरित होते हैं।

भक्ति-संस्कारयुक्त को भक्त कहा जाता है, श्रीकृष्ण एवं श्रीकृष्ण सम्बन्धी समस्त वस्तुओं के उल्लास के निमित्त निखिल क्रियाओं से निरन्तर स्वयं को मण्डित करना ही भक्ति है, भक्तगण निज-निज अधिकार में पूर्ण होने पर भी प्रेम की तरतमता से ही उनमें तारतम्य होता है, प्रह्लाद, पाण्डव, यादव, उद्धव, ब्रजदेवीगणों में उत्तरोत्तर श्रेष्ठता ममत्वाधिक्य से है, उनमें से सर्वश्रेष्ठा महाभावस्वरूपा श्रीराधा हैं, भक्तगण उन भक्तिकांचनवल्ली के पत्र-पुष्प स्वरूप होते हैं। भक्तों के अंग इन्द्रिय, मनोवृत्ति समूह भी सच्चिदानन्दमय होने से सच्चिदानन्दरूपा भक्ति के साथ उनका सम्बन्ध अनायास ही हो जाता है। प्राकृत अभिमान त्याग ही अदीनता का सोपान है, गुणातीत व्यक्तियों के द्वारा 'नाम' ग्रहण पूर्वक प्रार्थना से प्राकृत अहंकार विनष्ट होता है, अतः

प्रस्तुत 'श्रीनामामृतसमुद्रः' नामक ग्रन्थरत्न प्रकृष्ट शान्ति प्रदायक में अत्युत्कृष्ट है।

श्रील नरहरि चक्रवर्त्ति (घनश्यामदास) प्रकृत ग्रन्थ प्रणेता हैं, इसमें श्रीमन्महाप्रभुजी के समसामयिक एवं तत्परवर्त्ती अनेक वैष्णवों के नाम समाहृत हुए हैं, ग्रन्थ आकृति में क्षुद्र होने पर भी ऐतिहासिक दृष्टि से इसका यथेष्ट मूल्य है। इसका संक्षिप्त आकार 'सपार्षद गौरांग वन्दना' नामक प्रबन्ध मुद्रित आधुनिक ग्रन्थों में प्राप्य है।

ग्रन्थकार–श्रीजगन्नाथजी के सुपुत्र एवं श्रीनृसिंह चक्रवर्त्ति के शिष्य थे, आपका निवास स्थान–मुर्शिदाबाद जिला के अन्तर्गत जंगीपुर के निकट रेङग्राम है, आपका जन्म खृष्टीय सप्तदश शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ था। आपके पितृदेव श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ति के शिष्य थे। आपने लिखा है–

निज परिचय दिते लज्जा हय मने।
पूर्ववास गंगातीरे जाने सर्व जने।।
विश्वनाथ चक्रवर्त्ति सर्वत्र विख्यात।
ताँर शिष्य मोर पिता विप्र जगन्नाथ।।
ना जानि कि हेतु हैल मोर दुइ नाम।
नरहरिदास, आर दास घनश्याम।।
गृहाश्रम हइते हइनु उदासीन।
महापाप विषये मजिनु रात्रि दिन।।

आप श्रीगोविन्ददेवजी के आदेश से ब्रज में आकर श्रीगोविन्ददेवजी के पाचक कार्य में नियुक्त हुए। इस हेतु आपका शुभनाम 'रसोइया पुजारी' हुआ था।

आपके द्वारा रचित सद्ग्रन्थ समूह-

(१) भक्तिरत्नाकर (२) नरोत्तम विलास (३) श्रीनिवास चरित्र (४) गीत चन्द्रोदय (५) छन्दः समुद्र (६) गौर चरित्र चिन्तामणि (७) श्रीनामामृतसमुद्रः (८) पद्धति प्रदीप (९) संगीत सारसंग्रह प्रभृति है। आप सुपाचक, सुगायक, सुवादक, संगीतज्ञ एवं परम भक्त थे। आपने श्रीचैतन्यभागवत, श्रीचैतन्यचरितामृत, श्रीचैतन्यमंगल में अलिखित एवं परवर्त्ती समय के भक्तवृन्दों के अप्रकाशित पूर्व जीवन वृत्तान्त समूह को भक्तिरत्नाकर नरोत्तम-विलास में लिपिबद्ध करके- 'वयन्तु हरिदासानां पादत्राण परायणाः' कथन को सार्थक किया है।

-हरिदासशास्त्री

।। श्रीश्रीकृष्णचैतन्यचन्द्राय नमः।।

श्रीश्रीनामामृतसमुद्रः

संसारासारबोधप्रद मुदसदन श्रीगुरो प्रेमकन्द,
श्रीराधाकृष्ण हे हे प्रवररसमय श्रीलचैतन्यचन्द्र।
श्रीनित्यानन्द कामार्व्वुद – मददमन श्रीमदद्वैतदेव,
श्रीवासादि प्रमत्त प्रभुपरिकर भो मां प्रसीद प्रसीद।।

श्रीगुरु श्रीराधाकृष्ण चैतन्य निताइ।
चरणे शरण देह अद्वैत गोसाँइ।।१।।
गदाधर श्रीनिवास स्वरूप नरहरि।
प्रियाअह गौर–प्रेमामृत कृपा करि।।२।।
दयार समुद्र गौरप्रिय हरिदास।
मोर पापचित्ते कर नामेर प्रकाश।।३।।
शची जगन्नाथ पद्मा हाड़ाइ पण्डित।
अबुध बालके दया एइ से उचित।।४।।
अनुग्रह कर श्रीकुबेर नाभादेवी।
तुया पुत्र अद्वैत - चरण येन सेवि।।५।।
लक्ष्मी विष्णुप्रियादेवी निजगण सने।
कृपा कर नदीयार विहार रहु मने।।६।।
वसुधा जाह्नवादेवी दया कर मोरे।
तोमार निताइर लीला स्फुरुक आमारे।।७।।
एइ कर नित्यानन्द - सुता गंगादेवी।
श्रीवसु–जाह्नवा सह से चरण सेवि।।८।।

दीने दया करहे माधव रत्नावती।
तुया पुत्र गदाधर – पदे रहु मति।।९।।
माधधि मालिनि दमयन्ति हे श्रीसीता।
तोमारा बिने गौरांगेर के आछे रक्षिता।।१०।।
वासुदेव सार्व्वभौम भट्टाचार्य ओहे।
तोमार गौरांग गुणे मत्त कर मोहे।।११।।
शाठीर जननि ! शाठि ! निवेदि चरणे।
श्रीगौर–विमुखजन ना देखि स्वपने।।१२।।
श्रीवासेर दासी दु:खी सुखी हैला तुमि।
करुणा करह येन सुखी हइ आमि।।१३।।
पद्मनाभ चक्रवर्त्ति ! भृत्य कर तार।
गौर – परिकरे तारतम नाहि यार।।१४।।
श्रीचैतन्यदास विप्र ! एइ मात्र चाइ।
ये देखे सुकृत् गौर, तार गुण गाइ।।१५।।
दास गदाधर मोरे राख से चरणे।
ना भुलि गौरांग येन जीवने मरणे।।१६।।
गोविन्द गरुड़ कविचन्द्र काशीश्वर।
मो अधमे कर निज दासेर किंकर।।१७।।
विश्वरूप श्रीअच्युत वीरचन्द्र प्रभु।
देह पद–सेवा येन ना भुलिये कभु।।१८।।
गौरीदास नन्दन आचार्य्य वनमालि।
ए दु:खिरे कर निज नाचेर काँगाली।।१९।।
विद्यानिधि हलायुध श्रीरघुनन्दन।
वारेक करह धनी दिया प्रेमधन।।२०।।
मुरारि गोविन्द हे मुकुन्द वासुघोष।
चरणे धरिया बलि क्षेम मोर दोष।।२१।।

अनन्त ईश्वर ओहे माधवेन्द्रपुरी।
राधाकृष्ण–रसे मत्त कर कृपा करि।।२२।।
केशव भारती कृपा कर एइ बार।
विश्वम्भर बिनि येन ना जानिये आर।।२३।।
वासुदेव दत्त उद्धारण पुरन्दर।
त्राण कर, पुकारये ए दीन पामर।।२४।।
दामोदर श्रीकर वल्लभ सनातन।
निज गुणे देह शुद्ध भकति–रतन।।२५।।
गोपीनाथ आचार्य्य नृसिंह सिहिश्वर।
घुचाह कुबुद्धि हौक विशुद्ध अन्तर।।२६।।
ओहे श्रीभूगर्भ लोकनाथ एइ बार।
दया–कर मो सम अधम नाहिं आर।।२७।।
भागवत माधव आचार्य्य दयामय।
एइ कर प्रभुर चरित्रे मन रय।।२८।।
गौरप्रिय प्राण ओहे रूप सनातन।
देह शक्ति करि प्रभुर चरित्र वर्णन।।२९।।
श्रीगोपालभट्ट ओहे दास रघुनाथ।
दन्ते तृण धरि कहि–कर आत्मसात्।।३०।।
श्रीजीव सुबुद्धि मिश्र राघव कंसारि।
कर ये उचित किछु बलिते ना पारि।।३१।।
ओहे गौरांगेर प्रिय श्रीधर ठाकुर।
लाज तेजि बलिये दुर्गति कर दूर।।३२।।
श्रीवंशीवदन वक्रेश्वर शिवानन्द।
दुःख घुचाइया देह वारेक आनन्द।।३३।।
श्रीमधु पण्डित काशीमिश्र गंगादास।
ओ पदभरसा मोरे ना कर निरास।।३४।।

काशीनाथ हरिभट्ट वसु रामानन्द।
दान देह श्रीगौरचन्द्रेर पदद्वन्द्व।।३५।।
ओहे कर्णपूर ! एइ बलिये तोमाय।
निरन्तर मग्न कर गौरांग–लीलाय।।३६।।
श्रीकमलाकर पिप्लाइ सुन हे महेश।
मो असते त्राणि, यश घुसिवे अशेष।।३७।।
ओहे कमलाकान्त निवेदि निश्चय।
वैष्णव–चरणामृते येन निष्ठा हय।।३८।।
ओहे झाडूदास ! एइ पुनः पुनः बुलि।
हौक मोर सर्व्वस्व वैष्णव–पदधूलि।।३९।।
ओहे कालिदास ! मोर एइ बड़ आश।
वैष्णव उच्छिष्टे येन बाड़ये विश्वास।।४०।।
श्रीजगदानन्द कीर्त्तनीया षष्ठिधर।
गौर गुण गाई शक्ति देह निरन्तर।।४१।।
प्रेममय श्रीमीनकेतन रामदास।
नित्यानन्द गुणे मोर कराह उल्लास।।४२।।
श्रीकान्त ! घुचाह मोर विपरीत ज्ञान।
अभिन्न–चैतन्य नित्यानन्द हौक प्राण।।४३।।
ओहे विज्ञ अनुपम ! एइ कर मेन।
गौर पादपद्म कभु ना छाड़िये येन।।४४।।
ओहे ब्रह्मानन्द श्रीपरमानन्द पुरि।
भक्ति पथे सतत राखह चुले धरि।।४५।।
चापाल गोपाल रक्षा कर ए दुर्जने।
अपराध नहे येन भक्तेर स्थाने।।४६।।
जगाइ माधाइ दुइ भाइ दया कर।
अनेक जन्मेर पाप एइ बार हर।।४७।।

श्रीचन्द्रशेखर रघुपति उपाध्याय।
एइ कर सुसिद्धान्त स्फुरुक हियाय।।४८।।
ओहे शिखि माहिति ! कर मोर हित।
श्रीकृष्णचैतन्य जगन्नाथे रहु प्रीत।।४९।।
श्रीनाथ तुलसी मिश्र काला कृष्णदास।
मोरे उद्धारिया कर महिमा प्रकाश।।५०।।
सारंग सुन्दरानन्द गोविन्द उदार।
संसार यातना इहते करह निस्तार।।५१।।
ओहे रत्नबाहु भवानन्द धनंजय।
कातरे करिले दया महिमा बाड़य।।५२।।
ओहे वृन्दावन ! नारायणीर कुमार।
तोमरा थाकिते केन ए दशा आमार।।५३।।
उद्धारह यदुनाथ ठाकुर मुरारि।
विषय-विषेर ज्वाला सहिते ना पारि।।५४।।
ओहे प्रतापरुद्र राजा मिनति आमार।
काम क्रोधादिक दुष्टे करह संहार।।५५।।
सुनहे हिरण्य चिरंजीव नारायण।
नित्यानन्दाद्वैत - गौर गुणे रहु मन।।५६।।
एइ कर बुद्धिमन्त खान महामति।
श्रीगौरगोविन्द हौक मोर प्राणपति।।५७।।
हृदयचैतन्य ! पूर्ण कर मोर आश।
गौर-गुण कहे येइ, तार हओ दास।।५८।।
एइ कर भवानन्द श्रीगर्भ श्रीनिधि।
गौरांगेर ये ये लीला गाइ निरवधि।।५९।।
ओहे प्रबोधानन्द निवेदि तोमारे।
गौर-गुणेते वारेक मातह आमारे।।६०।।

जगदीश श्रीमान् संजय सुदर्शन।
मोरे केन छाड़ हइया पतितपावन।।६१।।
द्विज हरिदास जगन्नाथ बलराम।
जगत् उद्धार कर, मोरे केन वाम।।६२।।
गौरप्रिय दण्ड अधिकारी हरिदास।
मोरे दण्ड करि अपराध कर नाश।।६३।।
ओहे अभिराम ! एइ कहिये तोमारे।
पाषण्डी असुर हैते रक्षा कर मोरे।।६४।।
ओहे राय रामानन्द रसेर सागर।
रसिक भकत संग देह निरन्तर।।६५।।
ओहे गौरप्रिय श्रीगोविन्द भक्तिराशि।
गौर–पादपद्मसेवा देह दिवानिशि।।६६।।
गौरपाद – उपाधान ठाकुर शंकर।
गौर–अंगगन्धे मत्त कर निरन्तर।।६७।।
प्रिय शुक्लाम्बर ओहे ! नदिया निवासी।
मोरे घृणा करिले करिवे लोके हासि।।६८।।
निरवधि एइ कर ठाकुर लोचन।
गौरांग–विहारे येन डुबे मोर मन।।६९।।
ओहे देवानन्द ! वलि भूमिते लोटाया।
देशे देशे फिरि येन गोरागुण गाञा।।७०।।
श्रीपुरुषोत्तम रामदास देह एइ चाई।
गौरगुणे मत्त हैया नाचिया बेड़ाइ।।७१।।
ठाकुर मुकुन्द एइ करिते जुयाय।
गौर गुण यथा तथा थाको दीन प्राय।।७२।।
ओहे श्रीपरमेश्वर दास ! देह एइ वर।
गौरगुण सुनि येन कान्दि निरन्तर।।७३।।

अनन्त आचार्य्य यदु गांगुलि मंगल।
घुचाह आमार ए यतेक अमंगल।।७४।।
एइ कर श्रीगोपालदास सुलोचन।
राधाकृष्ण चैतन्य चरिते रहु मन।।७५।।
श्रीचैतन्यदास रामदास विष्णुदास।
नवद्वीपे वृन्दावने देह मोरे वास।।७६।।
ओहे कृष्णानन्द ! कृपा कर मो अधमे।
स्फुरुक गौरांग लीला दिवानिशिक्रमे।।७७।।
ओहे शुभानन्द ! पूर्ण कर मोर आश।
निशिशेषे देखि–गौर–शयन–विलास।।७८।।
सुन सत्यराज ! प्राते गौरगण सने।
स्नानादि भोजनरंग देखि ए नयने।।७९।।
ओहे श्रीमुकुन्द ! गौरेर पूर्व्वाह्न–कौतुके।
भक्तगृहे भोजनादि देखाह आमाके।।८०।।
देखाह बसन्त ! गौर मध्याह्न कालेते।
गणसह उद्याने विहरे येनमते।।८१।।
एइ कर सुधानिधि कमलनयन।
अपराह्न काले देखि नदिया भ्रमण।।८२।।
ओहे मनोहर ! देखाओ विश्वम्भरे।
निजगृहे सायाह्नेते येरूपे विहरे।।८३।।
कृपा कर सूर्य्यदास, देखि गौरचन्द्र।
प्रदोषे श्रीवास–गृहे येरूप आनन्द।।८४।।
एइ कर रामभद्र ! श्रीवास अंगने।
निशाय मातिये प्रभु–सह संकीर्त्तने।।८५।।
ओहे गोपीकान्त मिश्र ! वलिये तोमाय।
ब्रजे राधाकृष्ण लीला स्फुराह आमाय।।८६।।

राखहे श्रीपति वृन्दाविपिन – माझार।
दिवानिशिक्रमे देखि दौँहार विहार।।८७।।
देखाह निशान्ते सुख श्रीमधुसूदन।
निकुञ्जे विलास, पुन गृहेते शयन।।८८।।
प्रातःकाले नवनी ! देखाह पँहु रंग।
शय्योत्थान–स्नान–भोजनादि गणसंग।।८९।।
ओह कानु ! कृष्णेर पूर्व्वाह्ने वनगमन।
देखाह राधिका येछे उत्कण्ठित मन।।९०।।
श्रीमन्त ! देखाह राधाकृष्ण सखी संग।
मध्याह्ने मिलन कुण्डतीरे नाना रंग।।९१।।
देखाह नन्दिनी राधा–गृहे गति स्थिति।
अपराह्ने सखासह कृष्णेर ये रीति।।९२।।
साहाह्ने राधिका रीत देखाह नन्दन।
यशोदा करये यैछे कृष्णेर लालन।।९३।।
यादव ! देखह दौँहार गृहे व्यवहार।
प्रदोषे निकुञ्जे यैछे मिलन दौँहार।।९४।।
ओहे पीताम्बर ! नित्य देखाह आमाय।
रासादि विलास, कुञ्जे शयन निशाय।।९५।।
बलभद्र भट्टाचार्य्य ! एइ निवेदन।
गौरचन्द्रेर गुणगाने रहु मोर मन।।९६।।
ओहे गोपीनाथ सिंह ! एइ वर चाइ।
फाल्गुनी पूर्णिमा–जन्मतिथि येन गाइ।।९७।।
ओहे द्विज वाणीनाथ पूर मोर आश।
गाङ शिशुरूप विश्वम्भरेर प्रकाश।।९८।।
समर्पह काशीनाथ श्रीचरणे तार।
पिता माता ध्वज वज्र चिह्न देखे यार।।९९।।

देह कवि दत्त शक्ति गाई निरन्तर।
चोरे कृपा येरूपे करिला विश्वम्भर।।१००।।
श्रीहरि ! गौरांग रंग देखाह आमारे।
भुञ्जये नैवेद्य यैछे श्रीहरिवासरे।।१०१।।
श्रीतपनमिश्र मोरे राख तार पाय।
क्रन्दन–छलेते हरिनाम ये लओयाय।।१०२।।
ओहे जितामिश्र मोर प्रभु हौक तेहो।
लोक–वर्ज्यहाण्डि–आसने आनन्दे वैसे येहो।।१०३।।
वल्लभ चैतन्य दास राख तार सने।
षष्ठी–पूजाद्रव्य ये खाइल माता–स्थाने।।१०४।।
शिवानन्द दन्तुर ! राखह तार साथे।
ये मुतिल मुरारिर भोजन थालिते।।१०५।।
ओहे श्रीगोपाल ! तारे कराह स्मरण।
कुक्कुर–शावक येहो करिल पालन।।१०६।।
ओहे लक्ष्मीनाथ ! तेहो रहु मोर मने।
माये प्रहारिया येहो नारिकेल आने।।१०७।।
ओहे नयनमिश्र ! मोरे देह तार संग।
वालिका सहित येहोँ करे नाना रंग।।१०८।।
पतित देखिया दया करह नन्दाइ।
गौरांगेर अपार चाञ्चल्य येन गाइ।।१०९।।
श्रीउद्धव ! तार पदे राखो मोर चित।
अल्पे सर्व्वशास्त्रे यैंहो हइला पण्डित।।११०।।
श्रीरंग ! देखाह मोरे गौरविधु – मुख।
शचीमाता यारे देखि भुले सब दुख।।१११।।
ओहे रघुनाथ मिश्र ! गाइ येन तारे।
ये विद्याविलासे काँपाइल पाषण्डिरे।।११२।।

जगदीश ! योगय कर ये रंग देखिते।
पडुया सहित जलकेलि जाह्नवीते।।११३।।
श्रीगोविन्दानन्द ! मोरे भृत्य कर तार।
भुवने विदित सार्व्वशास्त्रे जय यार।।११४।।
श्रीगोविन्द दत्त मोरे से रंग देखाह।
लक्ष्मीप्रिया संगे यैछे प्रभुर विवाह।।११५।।
पुरन्दर पण्डित राखह तार पासे।
बंगदेश धन्य यैंहो कैल विद्यारसे।।११६।।
जगन्नाथाचार्य्य मोरे देखाह से रंग।
विष्णुप्रिया-विवाह ये रूपे गौर-संग।।११७।।
वाणीनाथ वसु मोरे कर तार दास।
वायुछले प्रेमभक्ति ये करे प्रकाश।।११८।।
रामाइ ईशान देह से पदे सौंपिया।
भ्रमे ये आपने महापण्डित हइया।।११९।।
श्रीवैष्णवाचार्य्य मोरे राख तार पासे।
नदियार भट्टाचार्य्य काँपे यार त्रासे।।१२०।।
श्रीवैष्णवानन्द राख तारे मोर चिते।
मायेरे आनन्द यैंहो देन नाना मते।।१२१।।
सुनहे परमेश्वरदास ! दयामय।
देखि येन गौरांगेर दिग्विजयि-जय।।१२२।।
माधव पण्डित ! तारे मिलाह आमाय।
भक्तेरे भाण्डिया यैंहो फिरे नदियाय।।१२३।।
श्रीरत्न पण्डित ! भक्ति देह ताँर पाय।
ईश्वरपुरीरे कृपा ये करे गयाय।।१२४।।
ओहे ध्रुवानन्द ! मोर प्रभु हौक तैंहो।
चिनिलेन भक्त सब, व्यक्त हैला यैंहो।।१२५।।

ओहे पुष्पगोपाल ! देखाह मोरे तारे।
ये विष्णुभट्टाय वैसे श्रीवासेर घरे।।१२६।।
देखाइ करुणा करि श्रीकण्ठाभरण।
नित्यानन्द-संगे विश्वम्भरेर मिलन।।१२७।।
भागवत दास ! तारे देखाह आमाय।
यारे देखे षड्भुज श्रीनित्यानन्दराय।।१२८।।
श्रीहर्ष ! करह मोरे तार अनुचर।
यार विश्व अंग देखे अद्वैत ईश्वर।।१२९।।
ओहे रघुमिश्र ! देह से पदयुगल।
नित्यानन्द दिल यारे श्रीहल मूषल।।१३०।।
ओहे भगवानाचार्य्य ! एइ येन गाइ।
येरूपे पाइल प्रेम जगाइ माधाइ।।१३१।।
रामानन्द ! देखाह या, देखे शचीमाय।
श्याम-शुक्लरूप गौर नित्यानन्द राय।।१३२।।
ओहे रुद्र ! गाइ येन महापरकास।
सात प्रहरिया-भावे ऐश्वर्य्य-विलास।।१३३।।
भगवान् पण्डित ! गाओयाओ अनुक्षण।
नगरे नगरे यैछे प्रभुर कीर्त्तन।।१३४।।
श्रीगोपालाचार्य्य ! एइ गाइ अनिवार।
काजिर दमन आर कीर्त्तन-विहार।।१३५।।
दामोदर दास ! से चरणे राख मोरे।
ये वराह रूपे तत्त्व कहे मुरारिरे।।१३६।।
पण्डित जगदानन्द ! देह से चरण।
मुरारिर स्कन्धे ये करिल आरोहण।।१३७।।
ओहे विष्णुदासाचार्य्य गाइ से चरित।
शुक्लाम्बर-तण्डुल खाइते यार प्रीत।।१३८।।

ओहे भोलानाथ दास ! राख सेइ संगे।
यँहो आम्रफल भक्ते खाओयाइल रंगे।।१३९।।
वनमाली विश्वास ! देखाह रंग तार।
भक्त–वस्त्र हरिया कौतुक अति याय।।१४०।।
ओहे भवनाथ कर ! देह से चरण।।
रुक्मिणीर वेशे नाचि ये पियाइल स्तन।।१४१।।
ओहे गंगामन्त्री ! तँहो स्फुरुक अन्तरे।
ये प्रिय मुकुन्दे दण्ड – अनुग्रह करे।।१४२।।
अनन्त दास ! यश गाइ येन तार।
द्वार दिया निशाय कीर्त्तन–रंग यार।।१४३।।
देह मोरे शक्ति ओहे हाजरा विष्णाइ।
नित्यानन्दाद्वैतेर कलह येन गाइ।।१४४।।
हे विजय ! प्राण हौक से शची–पराण।
वैष्णवापराध ये करिल सावधान।।१४५।।
कृपा करि देह वाचस्पति नारायण।
स्तुति करि, ये वर पाइल भक्तगण।।१४६।।
देखाह से रंग मोरे पण्डित श्रीमान्।
हरिदासे कृपा, श्रीधरेर जल पान।।१४७।।
भागवती देवानन्द ! देखाह से रंग।
निशाते गंगाय जलकेलि भक्त–संग।।१४८।।
विजय पण्डित ! मोर प्राण हौक से।
अद्वैते करिया दण्ड लज्जा पाय ये।।१४९।।
देखाओह रंगवाटी श्रीचैतन्य दास।
अद्वैतेर घरे यैछे भोजन विलास।।१५०।।
आमारे जानाह कृपा करिया कंसारि।
राम कृष्ण ये दुइ प्रभु जानिला मुरारि।।१५१।।

श्रीआचार्य्यरत्न ! मोरे कृपा करु से।
मृतपुत्र – मुखे तत्त्व वाखानये ये।।१५२।।
ओहे जगन्नाथ तीर्थ ! तार गुण गाइ।
ये पड़े, गंगाय क्रोधे, धरिला निताइ।।१५३।।
मुरारि माहाति ! गुण गाइ येन तार।
नारायणी–अवशेष–पात्र हइला यार।।१५४।।
मुरारि पण्डित ! कृपा करह आमाय।
अशेष गौरांग लीला देखि नदियाय।।१५५।।
श्रीअनन्ताचार्य्य ! चित्ते चिन्ति एइ आश।
विष्णुप्रियासह गौरचन्द्रेर विलास।।१५६।।
अनुग्रह करि, एइ कर कलानिधि।
नदिया–विहार सुखे गाइ निरवधि।।१५७।।
श्रीहस्तिगोपाल ! रंग देखाह ताहार।
श्यामरूप अन्तरे, वाहिरे गौर यार।।१५८।।
अकिंचन दास ! कृपा करह अशेष।
देखि येन श्रीगौरचन्द्रेर भावावेश।।१५९।।
प्रेमी कृष्णदास ! समर्पह तार पाय।
ये राधिकाप्रेमे भासि जगत् भासाय।।१६०।।
देखाइ माधव पट्टनायक ! ताहारे।
ये राधिका ऋण कभु शोधिते ना पारे।।१६१।।
श्रीसुग्रीव मिश्र ! तारे देह समर्पिया।
यार गौरवर्ण राधा–माधुरी भाविया।।१६२।।
अनुभवानन्द ! कृपा करह आपुनि।
गाइ येन गौर अवतार – शिरोमणि।।१६३।।
वासुदेव तीर्थ ! मने रहु से चरित।
जीवे कृपा लागि यार वेश विपरीत।।१६४।।

देखाह मुरारि विप्र ! गौरांग विलास।
दक्षिणादि भ्रमि, वृन्दावन–क्षेत्र वास।।१६५।।
एइ कर कूर्म वासी श्रीकूर्म ठाकुर।
दक्षिण भ्रमण–लीला गाइया प्रभुर।।१६६।।
तुलसी पड़िछा ! मग्न कर से लीलाय।
ब्रह्मा शिव शेष यार अन्त नाहिं पाय।।१६७।।
रामानन्द मंगराज, कानाइ खुँटिया।
धन्य कर, ब्रह्मार दुर्लभ प्रेम दिया।।१६८।।
जगन्नाथ पड़िछा ! ए मिनति आमार।
भासि येन गौर लीला समुद्र माझार।।१६९।।
एइ गाइ श्रीपरमानन्द महापात्र।
गौरचन्द्र नदिया ना छाड़े तिलमात्र।।१७०।।
जगन्नाथ माहाति ! से स्थाने रहु आश।
यथा यथा गौरभक्तगणेर विलास।।१७१।।
काशीनाथ माहाति ! जुड़ाइ मोर आँखि।
याँहा याँहा दृष्टि याय गौरमय देखि।।१७२।।
ओहे रामचन्द्र कविराज ! करो हित।
निरन्तर गाइ येन कृष्णेर चरित।।१७३।।
एइ कर जगन्नाथ कर ! प्रेमराशि।
कृष्ण–जन्म–उत्सव गाइया सुखे भासि।।१७४।।
चक्रपाणि आचार्य्य ! से पदे देह रति।
येँहो से पूतना बधि, दिल मातृगति।।१७५।।
कामदेव ! देह मोरे से पदे सौँपिया।
संकट भांगिल येहोँ शयने थाकिया।।१७६।।
राखह चैतन्यदास ! तार भक्त संग।
तृणावर्त्त बधि, ये करिल नाना रंग।।१७७।।

सुनहे जांगलि ! एइ गाइ अनुक्षण।
जननी बान्धये कृष्णे–हासे गोपीगण।।१७८।।
दुर्लभ विश्वास ! मोरे सुखी करु से।
दामबन्धे थाकि दुइ वृक्षे भांगे ये।।१७९।।
ओहे श्यामदासाचार्य्य ! स्फुराह आमारे।
धान्य दिया फल कृष्ण किने ये प्रकारे।।१८०।।
ओहे ज्ञानदास ! एइ गाइ निरन्तर।
श्रीकृष्णेर अशेष चाञ्चल्य मनोहर।।१८१।।
लोकनाथ राजेन्द्र ! तोमारे एइ चाइ।
वक–वत्स अघासुर–बध येन गाइ।।१८२।।
ओहे जनार्द्दन दास ! घुचाओ मनेर दुःख।
धेनुक–प्रलम्ब बध सुनि, पाइ सुख।।१८३।।
देखाइ आमारे ओहे श्रीहरिचरण।
गोप–परित्राण, दावाग्नि–कालियदमन।।१८४।।
ओहे कामा भट्ट ! गाइ नन्देर मोक्षण।
व्रति–कन्या–प्रिय चीरगणहरण।।१८५।।
नारायणदास ! मोर स्फुराह अन्तरे।
यज्ञपत्नीगण यैछे भेटिल कृष्णेरे।।१८६।।
ओहे राम ! संगी करह ताहार।
गोवर्धन धरि, सुख बाड़िल याहार।।१८७।।
देवानन्द दास ! मोरे राख तार पासे।
इन्द्र–यज्ञ भंग ये करिल अनायासे।।१८८।।
हरिहरानन्द ! मोरे कराह दर्शन।
गोविन्दाभिषेक यैछे कैल देवगण।।१८९।।
श्रीमान् ठक्कुर ! तारे देखाह आमारे।
ये वनभोजन छले मोहिल ब्रह्मारे।।१९०।।

राखह श्रीनाथ चक्रवर्त्ति तार सने।
महारास–लीला ये करिल वृन्दावने।।१९१।।
श्रीहोड़ गोपाल मोर प्रभु हौक से।
शंखचूड़ – अरिष्ट केशीरे बधे ये।।१९२।।
नर्त्तक गोपाल तृप्त कर मोर आँखि।
सखीसह श्रीराधागोविन्द लीला देखि।।१९३।।
ओहे वाणीनाथ पट्टनायक ! प्रवीण।
गाइ येन व्रजलीला ये नित्य नवीन।।१९४।।
श्रीपुरुषोत्तम तीर्थ ! एइ निवेदन।
मथुरा–द्वारकादि लीलाय रहु मन।।१९५।।
चिदानन्द ! करुणा करह कृष्ण पाइ।
व्रज ना छाड़ेन कभु, एइ येन गाइ।।१९६।।
उपेन्द्र आश्रम ! मोरे राख तार पासे।
पिता माता सखा सखी सभे ये सन्तोषे।।१९७।।
श्रीआनन्दपुरी ! प्राणनाथ हौक से।
निरन्तर वृन्दावने विलसये ये।।१९८।।
श्रीवदनानन्द हे ! आनन्द देह दान।
वहिर्मुख जनेर ज्वालाय ज्वले प्राण।।१९९।।
भास्कर ठाकुर ! एइ करह निर्द्धार।
कृष्णे ये विमुख, मुख ना देखिये तार।।२००।।
श्रीगोविन्द पुजारी चैतन्यदास ओहे।
कृष्णनाम लये ये से संगी करु मोहे।।२०१।।
पुजारी गोँसाइ दास ! कराह दर्शन।
श्रीगोविन्द–गोपीनाथ – मदनमोहन।।२०२।।
गोँसाइ गोविन्द ! कहि, चरणे धरिया।
श्रीगोविन्द–पादपद्मे देह समर्पिया।।२०३।।

गौरिदास प्रिय मितु श्रीचान्द हालदार।
कृष्ण वहिर्मुख संग घुचाह आमार।।२०४।।
ओहे रघुनाथ ! मुइ काटो तार माथा।
ये ना माने कृष्णेर विग्रह, कृष्णकथा।।२०५।।
रत्नाकर ! तारे मुइ करोँ खण्ड खण्ड।
गौर–कृष्णे भेदबुद्धि करे ये पाषण्ड।।२०६।।
एइ निवेदिये सत्यानन्द हे भारती।
गौरकृष्ण–द्वेषिर मस्तके मारोँ लाथि।।२०७।।
ओहे काशीवासी श्रीशेखर द्विजराज।
ये प्रभु, निन्दये तार मुण्डे पडु वाज।।२०८।।
रघुनाथपुरी ! कुम्भीपाके पडु से।
गौरकृष्ण – लीलाय कुतर्क करे ये।।२०९।।
ओहे रामतीर्थ ! एइ विज्ञप्ति आमार।
गौरकृष्णे रति येन हय सभाकार।।२१०।।
दामोदरपुरी ! कृपा करह विदित।
प्रभु सम प्रभुर श्रीधामे हौक प्रीत।।२११।।
राघवपुरी हे ! तार हौक सर्वनाश।
नवद्वीप–भूमे यार नाहिक विश्वास।।११२।।
हे नृसिंहपुरी ! से याउक छारेखारे।
वृन्दावन–भूमे प्रीत ये जना ना करे।।२१३।।
एइ कर गौर – प्रिय तैर्थिक ब्राह्मण।
नवद्वीपे गणसह देखि वृन्दावन।।२१४।।
माधवेन्द्र – शिष्य गौरप्रिय द्विजवर।
मथुरा–मण्डले वास देह निरन्तर।।२१५।।
सहिते ना पारि, शक्ति देह विप्रदास।
विमत आचरे ये, ताहार करोँ नाश।।२१६।।

नृसिंहचैतन्य दास ! एइ निवेदिये।
संकीर्त्तन द्वेषि–पाषण्डीरे संहारिये।।२१७।।
हे लघुकेशव ! अग्नि ज्वालो तार मुखे।
दारु–शिला स्वर्णादि श्रीमूर्ति ये ना देखे।।२१८।।
ब्रह्मानन्द स्वरूप ! करि ये निवेदन।
अनन्त श्रवणे सुनि प्रभुर वर्णन।।२१९।।
कविराज मिश्र ! कवि वर्णिवेक याहा।
पुनः पुनः जन्म लैया सुनि येन ताहा।।२२०।।
श्रीमुकुन्दानन्द चक्रवर्त्ति ! एइ चाइ।
दोष छाड़ि वैष्णवेर गुण येन गाइ।।२२१।।
ओहे महानन्द ! मुख ना देखाह तार।
वैष्णवेते जाति बुद्धि करये ये छार।।२२२।।
श्रीमुकुन्द कविराज ! कर एइ हित।
हवे ये वैष्णव, तार पदे रहु चित।।२२३।।
श्रीराजीव ! तार संग घुचाह तुरिते।
ये पापीर जल–बुद्धि श्रीचरणामृते।।२२४।।
बड़ु जगन्नाथ ! दण्ड कराह तत्काल।
गुरुते मनुष्यबुद्धि करे ये चण्डाल।।२२५।।
भातुया गोपाल हे ! कराह तारे नष्ट।
गुरु–पदे रति खर्व्व कराय ये दुष्ट।।२२६।।
गीतापाठी विप्र ! कृपा कर ए मूर्खेरे।
भक्तिग्रन्थ–पाठे निष्ठाय देखि से प्रभुरे।।२२७।।
वासुदेव विप्र ! देह – दर्प कर दूर।
घृणा नहु, जीवे दया हउक प्रचुर।।२२८।।
श्रीप्रबोधानन्द – ज्येष्ठ त्रिमल्ल वेंकट।
कृपा कर मोरे, मुइ विषय–लम्पट।।२२९।।

ओहे श्रीपुरुषोत्तम गालिम ! विख्यात।
मो अधमे वारेक करह दृष्टिपात।।२३०।।
ओहे नीलाम्बर ! एइ निवेदि चरणे।
वैष्णवेर निन्दा येन ना सुनि श्रवणे।।२३१।।
ओहे वैद्य कृष्णदास ! करुणा – निधान।
परनिन्दा–रत मुइ, मोरे कर त्राण।।२३२।।
ओहे राढ़देशी कृष्णदास ! सुखमय।
परनिन्दुकेर संग घुचाह निश्चय।।२३३।।
विष्णुपुरी कृष्णानन्दपुरी ! महाधीर।
कृपा करि शोध, मोर ए पाप शरीर।।२३४।।
ओहे श्रीजानकीनाथ विप्र ! देह वर।
घुचुक कुतर्क, शठ कपट अन्तर।।२३५।।
ओहे वैद्य रघुनाथ ! ए यश तोमार।
कामक्रोधादिक रोग घुचाह आमार।।२३६।।
ओहे श्रीभारती ब्रह्मानन्द ! एइ चाइ।
निर्मत्सर हैया येन गोरा–गुण गाइ।।२३७।।
कृष्णदास ब्रह्मचारी ! निवेदि चरणे।
विषयिर मुख येन ना देखि स्वपने।।२३८।।
श्रीपरमानन्द उपाध्याय ! कहि ओहे।
विषयी असत् येन नाहिं पशे मोहे।।२३९।।
श्रीहृदयानन्द ! एइ कर सुनिश्चय।
विषयिर संगे संग येन नाहिं हय।।२४०।।
श्रीनकुल ब्रह्मचारी ! एइ निवेदन।
विषयिर अन्न येन ना करि भक्षण।।२४१।।
ओहे सादिपुरिया गोपाल ! कर दण्ड।
घुचाह आमार एइ अन्तर–पाषण्ड।।२४२।।

रक्षा कर नारायण ! वलिये तोमारे।
योषित्राक्षसी ग्रास करिल आमारे।।२४३।।
कृपा कर पुरुषोत्तम ब्रह्मचारि।
करिनु कुक्रिया बहु, कहिते ना पारि।।२४४।।
सुनहे गोकुल ! काम मोहिल आमाय।
नारी–पदाघात सदा खाइ खरप्राय।।२४५।।
एइ कर श्रीपरमानन्द अवधूत।
मोरे येन प्रहार ना करे यमदूत।।२४६।।
लोकनाथ पण्डित ! घुचाह ए कुरीत।
क्रोधे वश हइ सदा, करो विपरीत।।२४७।।
श्रीहरिचन्दन ! एइ मिनति आमार।
कखनो ना करे येन क्रोधे अधिकार।।२४८।।
भागवताचार्य्य ! कृपा कर, जानि मर्म।
लोभाक्रान्त हैया छाड़िनु निज धर्म्म।।२४९।।
ओहे काष्ठकाटा जगन्नाथ महाशय।
मोर कर्म्मबन्ध दृढ़ काटह निश्चय।।२५०।।
श्रीवल्लभ भट्ट ! दण्ड करह आपुनि।
अहंकारे मत्त मुइ, आपना ना चिनि।।२५१।।
श्रीनकड़ि दास ! कत कर विपरीत।
मो हेन भण्डेरे दण्ड करिते उचित।।२५२।।
रामचन्द्र पुरी ! एइ करह सर्वथा।
श्रद्धाहीन जने ना कहिये कृष्णकथा।।२५३।।
ओहे लक्ष्मणाचार्य्य ! एइ मात्र चाइ।
अप्रसादि द्रव्य येन भुलिया ना भाइ।।२५४।।
ओहे सनातन दास ! ए वर मागिये।
कर्म्मान्न विषय–विष येन ना भुञ्जिये।।२५५।।

नित्यानन्दप्रिय हे परमेश्वर दास।
मोरे ना लागुक ज्ञान–कर्म्मेर वातास॥२५६॥
कृपा करि एइ कर ठाकुर नन्दन।
सदा येन भक्ति–अंग करिये याजन॥२५७॥
सदाशिव कविराज ! मोर वाक्य धर।
प्राणिमात्रे उद्वेग ना दिये–एइ कर॥२५८॥
एइ कर श्रीमकरध्वज ! दयावान्।
कायमनोवाक्ये करि सवाय सम्मान॥२५९॥
ओहे योगेश्वर ! एइ वलिये निर्द्धार।
प्राण दिया करि येन पर–उपकार॥२६०॥
श्रीपरमानन्द गुप्त ! सुन मोर वाणी।
स्तुति–निन्दा दुःख–सुख तुल्य येन जानि॥२६१॥
ओहे शुभानन्द विप्र ! निवेदि तोमाय।
पर–तिरस्कार येन सहि तरुप्राय॥२६२॥
श्रीचन्दनेश्वर ! कृपा करह प्रचार।
अन्यदेवे रति येन ना हय आमार॥२६३॥
ओहे विश्वेश्वराचार्य्य ! मोरे कर रक्षा।
येन ना भुलिया कभु करि मुखापेक्षा॥२६४॥
एइ चाइ विद्यावाचस्पति महाभाग।
गुरु–कृष्ण–वैष्णव–द्वेषिर संगत्याग॥२६५॥
शिशु कृष्ण दास ! कृष्णदास कविराज।
रक्षा कर ए बार–करिनु दुष्ट काज॥२६६॥
ओहे श्रीअनन्त एइ करुणा करह।
गौर–नित्यानन्द–गुण गाइ गण–सह॥२६७॥
ओहे रघुनाथ – प्रिय श्रीविट्ठलनाथ।
गोविन्द हे ! देह वास गौरगण–साथ॥२६८॥
राघव गोँसाइ ! राधाकुण्ड सेवा दिया।
राखह निकटे, मुइ निपट दुखिया॥२६९॥

ओहे श्रीनिवास ! नरोत्तम ! श्यामानन्द !
गण सह कर कृपा मुइ अति मन्द।।२७०।।
श्रीजीवगोस्वामि - प्रिय भट्ट गदाधर !
स्फुराह श्रीभागवत-अर्थ मनोहर।।२७१।।
श्रीबिजुलि खान ! निज संगीगण-सने।
कृपा कर, वैराग्य जन्मुक मोर मने।।२७२।।
ओहे गौरप्रिय गोप ! ताहा चाइ आमि।
गोरस पियाइ ये रतन पाइले तुमि।।२७३।।
कि नारी पुरुष यत नदिया-निवासी।
कृपा कर, पाइ येन नदियार शशी।।२७४।।
ओहे ब्रजवासीगण ! एइ निवेदिये।
सखी-सह येन राधागोविन्द पाइये।।२७५।।
ओहे नवद्वीप - अनुगत यत जन।
कृपा कर-नदिया धियाइ अनुक्षण।।२७६।।
एइ कर - वृन्दावन - अनुगत यत।
वृन्दावन-ध्यान येन करि अविरत।।२७७।।
ठाकुर वैष्णवगण ! प्रार्थना करिये।
येन एइ नामामृत-समुद्रे भासिये।।२७८।।
पुन निवेदिये मुइ ये करिनु ग्रन्थन।
ये सुने सुनाय, तारे देह प्रेमधन।।२७९।।
मोरे अज्ञ देखि सभे हइवे सन्तोष।
आगे पाछे नाम इथे ना लइह दोष।।२८०।।
सभे मोर प्रभु - मुइ सभाकार दास।
करुणा करिया पूर्ण कर अभिलाष।।२८१।।
आर कि बलव - गौर प्रिय परिवार।
नरहरि अनाथेर केहो नाहिं आर।।२८२।।

।। इति श्रीमन्नामामृतसमुद्रः सम्पूर्ण।।

श्रीहरिदास शास्त्री सम्पादिता सद्ग्रन्थावली

क्रम.	सद्ग्रन्थ	मूल्य
१	वेदान्तदर्शनम् भागवतभाष्योपेतम्	१५०.००
२	श्रीनृसिंह चतुर्दशी	१०.००
३	श्रीसाधनामृतचन्द्रिका	२०.००
४	श्रीगौरगोविन्दार्चनपद्धतिः	२०.००
५	श्रीराधाकृष्णार्चनदीपिका	२०.००
६-७-८	श्रीगोविन्दलीलामृतम्	४५०.००
९	ऐश्वर्यकादम्बिनी	३०.००
१०	श्रीसंकल्पकल्पद्रुम	३०.००
११-१२	चतुःश्लोकीभाष्यम्, श्रीकृष्णभजनामृत	३०.००
१३	प्रेमसम्पुट	४०.००
१४	श्रीभगवद्भक्तिसार समुच्चय	३०.००
१५	ब्रजरीतिचिन्तामणि	४०.००
१६	श्रीगोविन्दवृन्दावनम्	३०.००
१७	श्रीकृष्णभक्तिरत्नप्रकाश	५०.००
१८	श्रीहरेकृष्णमहामन्त्र	५.००
१९	श्रीहरिभक्तिसारसंग्रह	५०.००
२०	धर्मसंग्रह	५०.००
२१	श्रीचैतन्यसूक्तिसुधाकर	१०.००
२२	श्रीनामामृतसमुद्रः	२०.००
२३	सनत्कुमारसंहिता	२०.००
२४	श्रुतिस्तुति व्याख्या	१००.००
२५	रासप्रबन्ध	३०.००

क्रम. सद्ग्रन्थ	मूल
२६–दिनचन्द्रिका	२०.०
२७–श्रीसाधनदीपिका	६०.०
२८–स्वकीयात्वनिरास, परकीयात्वनिरूपणम्	१००.०
२९–श्रीराधारससुधानिधि (मूल)	३०.०
३०–श्रीराधारससुधानिधि (सानुवाद)	११०.०
३१–श्रीचैतन्यचन्द्रामृतम्	३०.०
३२–श्रीगौरांग चन्द्रोदय	३०.०
३३–श्रीब्रह्मसंहिता	५०.०
३४–भक्तिचन्द्रिका	३०.०
३५–प्रमेयरत्नावली एवं नवरत्न	५०.०
३६–वेदान्तस्यमन्तक	४०.०
३७–तत्वसन्दर्भः	१००.०
३८–भगवत्सन्दर्भः	१५०.०
३९–परमात्मसन्दर्भः	२००.०
४०–कृष्णसन्दर्भः	२५०.०
४१–भक्तिसन्दर्भः	३००.०
४२–प्रीतिसन्दर्भः	३००.०
४३–दशःश्लोकी भाष्यम्	६०.०
४४–भक्तिरसामृतशेष	१००.०
४५–श्रीचैतन्यभागवत	२००.०
४६–श्रीचैतन्यचरितामृतमहाकाव्यम्	१५०.०
४७–श्रीचैतन्यमंगल	१५०.०
४८–श्रीगौरांगविरुदावली	४०.०
४९–श्रीकृष्णचैतन्यचरितामृत	१५०.०
५०–सत्संगम्	५०.०
५१–नित्यकृत्यप्रकरणम्	५०.०

क्रम.	सद्ग्रन्थ	मूल्य
५२	श्रीमद्भागवत प्रथम श्लोक	३०.००
५३	श्रीगायत्री व्याख्याविवृतिः	१०.००
५४	श्रीहरिनामामृत व्याकरणम्	२५०.००
५५	श्रीकृष्णजन्मतिथिविधिः	३०.००
५६-५७-५८	श्रीहरिभक्तिविलासः	६००.००
५९	काव्यकौस्तुभः	१००.००
६०	श्रीचैतन्यचरितामृत	२५०.००
६१	अलंकारकौस्तुभ	२५०.००
६२	श्रीगौरांगलीलामृतम्	३०.००
६३	शिक्षाष्टकम्	१०.००
६४	संक्षेप श्रीहरिनामामृत व्याकरणम्	८०.००
६५	प्रयुक्ताख्यात मंजरी	२०.००
६६	छन्दो कौस्तुभ	५०.००

बंगाक्षर में मुद्रित ग्रन्थ

क्रम.	सद्ग्रन्थ	मूल्य
१	श्रीबलभद्रसहस्रनाम स्तोत्रम्	१०.००
२	दुर्लभसार	१०.००
३	साधकोल्लास	५०.००
४	भक्तिचन्द्रिका	४०.००
५	श्रीराधारससुधानिधि (मूल)	२०.००
६	श्रीराधारससुधानिधि (सानुवाद)	३०.००
७	श्रीभगवद्भक्तिसार समुच्चय	३०.००
८	भक्तिसर्वस्व	३०.००
९	मनःशिक्षा	३०.००
१०	पदावली	३०.००
११	साधनामृतचन्द्रिका	४०.००
१२	भक्तिसंगीतलहरी	२०.००

गौशाला

आश्रम के अग्रभाग में एक बृहद् गौशाला है, जिसमें गोवंश की संख्या लगभग 171 है। यहाँ पर गाय की सेवा गाय के अनुकूल रूप में ही की जाती है न कि व्यवसाय की दृष्टि से। गाय श्रीकृष्णजी की भी पूज्य हैं जो कि उनकी भौमलीला से विदित है, उनको आदर्श मानकर ही यहाँ पर गाय की सेव्यरूप में सेवा की जाती है। गो-सेवा के लिए **'श्रीहरिदास गऊ संस्थान'** नामक ट्रस्ट की स्थापना की गयी है तथा तेहरा ग्राम श्रीवृन्दावन के निकट 11 एकड़ भूमि भी खरीदी गयी है, वहाँ पर एक और नवीन बृहद् गौशाला है। वृद्धावस्था में भी महाराजश्री स्वयं गो-सेवा करते हैं। इस आश्रम का वातावरण प्राचीन समय के ऋषिकुलों जैसा है। आश्रम में एक विराट् ग्रन्थागार भी है जिसमें प्रचुर प्राचीन मुद्रित एवं हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं। आश्रम की एक **'प्रेस'** भी है जिसका नाम 'श्रीगदाधर गौरहरि प्रेस' है। इस प्रेस से अभी तक लगभग 80 सद्ग्रन्थों का संस्कृत, हिन्दी एवं बँगला भाषा में प्रकाशन हो चुका है।

मुद्रक :

श्रीगदाधर गौरहरि प्रेस

(श्रीहरिदास निवास)

प्राचीन कालीदह, वृन्दावन (मथुरा)

फोन : 0565-2442098, 2443965